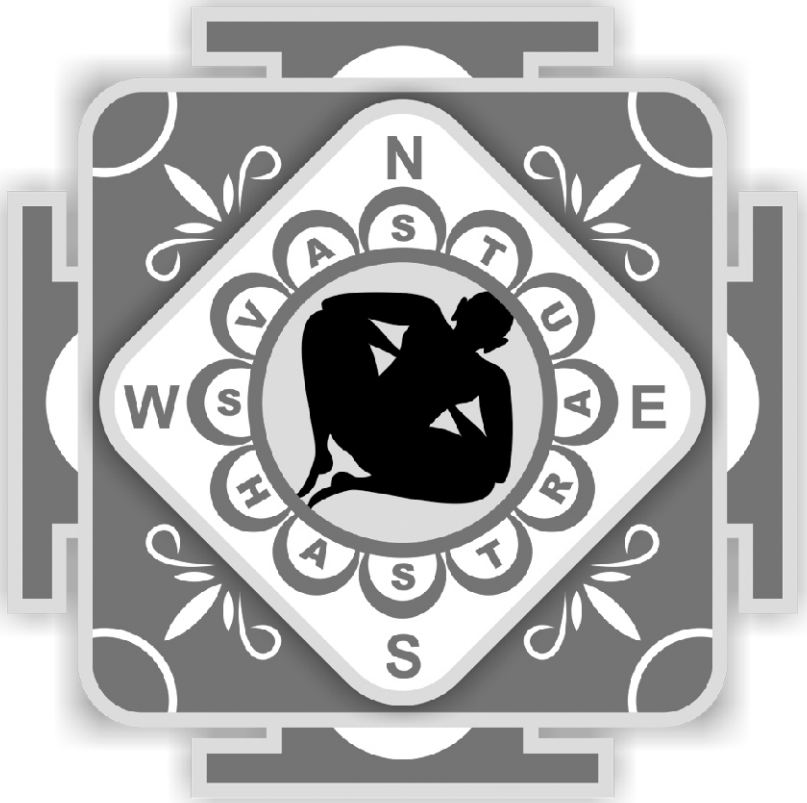

वास्तु शास्त्र

NITHRA®

Book / PDF Name : वास्तु शास्त्र

Pages : 116

Rate : 100

Edition : 2020

Copyright : Publisher

NITHRA®

वास्तु शास्त्र

क्या है वास्तु शास्त्र

- वास्तु का शाब्दिक अर्थ निवासस्थान होता है। इसके सिद्धांत वातावरण में जल, पृथ्वी, वायु, अग्नि और आकाश तत्वों के बीच एक सामंजस्य स्थापित करने में मदद करते हैं।
- जल, पृथ्वी, वायु, अग्नि और आकाश इन पाँचों तत्वों का हमारे कार्य प्रदर्शन, स्वभाव, भाग्य एवं जीवन के अन्य पहलुओं पर पड़ता है। यह विद्या भारत की प्राचीनतम विद्याओं में से एक है जिसका संबंध दिशाओं और उर्जाओं से है।
- इसके अंतर्गत दिशाओं को आधार बनाकर आसपास मौजूद नकारात्मक उर्जाओं को कुछ इस तरह सकारात्मक किया जाता है, ताकि वह मानव जीवन पर अपना प्रतिकूल प्रभाव ना डाल सकें।
- विश्रव के प्रथम विद्वान वास्तुविद् विश्रवकर्मा के अनुसार शास्त्र सम्मत निर्मित भवन विश्रव को सम्पूर्ण सुख, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति कराता है।
- वास्तु शिल्पशास्त्र का ज्ञान मृत्यु पर भी विजय प्राप्त कराकर लोक मे परमानन्द उत्पन्न करता है, अतः वास्तु शिल्प ज्ञान के बिना निवास करने का संसार मे कोई महत्व नहीं है।
- जगत और वास्तु शिल्पज्ञान परस्पर पर्याय है।वास्तु एक प्राचीन विज्ञान है।
- हमारे ऋषि मनीषियो ने हमारे आसपास की सृष्टि मे व्याप्त अनिष्ट शक्तियो से हमारी रक्षा के उध्देश्य से इस विज्ञान का विकास किया। वास्तु का उद्भव स्थापत्य वेद से हुआ है, जो अथर्ववेद का अंग है।
- इस सृष्टि के साथ साथ मानव शरीर भी पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश से बना है और वास्तु शास्त्र के अनुसार यही तत्व जीवन तथा जगत को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक है।
- भवन निर्माण मे भूखंड और उसके आसपास के स्थानों का महत्व बहुत अहम होता है।
- भूखंड की शुभ-अशुभ दशा का अनुमान वास्तुविद् आसपास की चीजो को देखकर ही लगाते है।

- भूखंड की किस दिशा की ओर क्या है और उसका भूखंड पर कैसा प्रभाव पड़ेगा, इसकी जानकारी वास्तु शास्त्र के सिद्धांतो के अध्ययन विश्लेषण से ही मिल सकती है।
- इसके सिद्धांतो के अनुरूप निर्मित भवन मे रहने वालो के जीवन के सुखमय होने की संभावना प्रबल हो जाती है।
- हर मनुष्य की इच्छा होती है कि उसका घर सुंदर और सुखद हो, जहां सकारात्मक उर्जा का वास हो, जहां रहने वालों का जीवन सुखमय हो।
- इसके लिए आवश्यक है कि घर वास्तु सिद्धांतो के अनुरूप हो और यदि उसमे कोई वास्तु दोष हो, तो उसका वास्तुसम्मत सुधार किया जाए।
- यदि मकान की दिशाओ मे या भूमि मे दोष हो तो उस पर कितनी भी लागत लगाकर मकान खड़ा किया जाए, उसमे रहने वालो की जीवन सुखमय नहीं होता। मुगल कालीन भवनो, मिस्र के पिरामिड आदि के निर्माण-कार्य मे वास्तुशास्त्र का सहारा लिया गया है।

हमारे जीवन में वास्तु का महत्व

- यह माना जाता है कि वास्तुशास्त्र हमारे जीवन को बेहतर बनाने एवं कुछ गलत चीजों से हमारी रक्षा करने में मदद करता है।
- दूसरे शब्दों में कहें तो वास्तुशास्त्र हमें नकारात्मक तत्वों से दूर सुरक्षित वातावरण में रखता है।

दिशाएं

यहां कुल 8 दिशाएं होती है। हर एक का मध्यबिंदू 45 अंश से अलग होता है या दूसरे शब्दों में प्रत्येक दिशा 45 अंश से व्याप्त होती है।

घड़ी की दिशा में निर्देश हैं:

1.पुर्वा

2.आग्नेया

3.दक्षिणा

4.नैऋत्य

5.पश्चिमा

6.वायव्या

7.उत्तर

8.ईशान

दिशाओं को खोजने के लिए दिशादर्शक (कंपास) का उपयोग कैसे करें?

- दिशादर्शक को अपनी हथेली के मध्य में रखें जिससे दिशादर्शक सीधा रहेगा।
- दिशादर्शक को तब तक घुमाते रहो जब तक लाल सुई उत्तर दिशा की ओर इशारा करें।

क्या है दिशाओं का महत्व

- वास्तुशास्त्र में दिशाओं का बहुत ही ज्यादा महत्व माना गया है।
- दिशाओं के आधार पर ही आपके गृहस्थ जीवन, दिनचर्या और कारोबार का लेखा जोखा सुव्यवस्थित तरीके से संचालित किया जा सकता है।
- अतः आपको इन बातों के बारे में जानना बहुत जरूरी है।

पश्चिम दिशा

- पश्चिम दिशा का स्वामी वरुण देव हैं। भवन बनाते समय इस दिशा को रिक्त नहीं रखना चाहिए।
- इस दिशा में भारी निर्माण शुभ होता है। इस दिशा में वास्तुदोष होने पर गृहस्थ जीवन में सुख की कमी आती है।
- पति पत्नी के बीच मधुर संबंध का अभाव रहता है। कारोबार में साझेदारों से मनमुटाव रहता है।
- यह दिशा वास्तु शास्त्र की दरुष्टि से शुभ होने पर मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख और समृद्धि कारक होता है। पारिवारिक जीवन मधुर रहता है।

वायव्य दिशा

- वायव्य दिशा यानी उत्तर-पश्चिम के मध्य को कहा जाता है।वायु देव इस दिशा के स्वामी हैं।
- वास्तु की दरुष्टि से यह दिशा मुक्त होने पर व्यक्ति के संबंधों में मधुरता आती है। लोगों से सहयोग, प्रेम और आदर प्राप्त होता है।
- इसके विपरीत वास्तु दोष होने पर मान-सम्मान में कमी आती है।
- लोगों से अच्छे संबंध नहीं बनते और अदालती मामलों में उलझन रहती है।

उत्तर दिशा

- वास्तुशास्त्र में पूर्व के समान ही उत्तर दिशा को रिक्त और भार रहित रखना शुभ माना गया है।
- इस दिशा के स्वामी कुबेर हैं जो देवताओं के कोषाध्यक्ष हैं।
- यह दिशा वास्तु दोष से मुक्त होने पर घर में धन वैभव की वृद्धि होती है। घर में सुख का निवास होता है। उत्तर दिशा वास्तु से पीड़ित होने पर आर्थिक पक्ष कमजोर होता है।
- आमदनी की अपेक्षा खर्च की अधिकता रहती है। परिवार में प्रेम एवं सहयोग की भावना प्रबल होती है।

ईशान दिशा

- उत्तर और पूर्व दिशा का मध्य ईशान कहलाता है। इस दिशा के स्वामी ब्रहम और शिव जी हैं।
- घर के दरवाजे और खिड़कियां इस दिशा में होना अत्यंत शुभ रहता है। यह दिशा वास्तुदोष से पीड़ित होने पर मन और बुद्धि पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।
- परेशानी और तंगी बनी रहती है। संतान के लिए यह दोष अच्छा नहीं होता। यह दिशा वास्तुदोष से मुक्त होने से मानसिक क्षमताओं पर अनुकूल प्रभाव होता है।
- शांति और समृद्धि बनी रहती है। संतान के संबंध में शुभ परिणाम आता है।
- वास्तु दोष के अनुसार भगवान शिव आकाश के स्वामी हैं।
- इसके अतंर्गत भवन के आसपास की वस्तु जैसे वृक्ष, भवन, खंभा, मंदिर आदि की छाया का मकान और उसमें रहने वाले लोगों के उपर प्रभाव अधिक रहता है।

पाताल

- वास्तुशासत्र के अनुसार भवन के नीचे दबी हुई वस्तुओं का प्रभाव भी भवन और उसमें रहने वाले लोगों के उुपर होता है।
- यह प्रभाव आमतौर पर दो मंजिल से तीन मंजिल तक बना रहता है। भवन निर्माण से पहले भूमि की जांच इसलिए काफी जरूरी हो जाता है।
- वास्तुशास्त्र के अनुसार इस दोष की स्थिति में भवन में रहने वाले का मन अशांत और व्याकुल रहता है।
- आर्थिक परेशानी का सामना करना होता है।

<u>वास्तु के कोण</u>

- जहां दोनों दिशाएं मिलती हैं, वह कोण बेहद महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि वह दोनों दिशाओं से आने वाली शक्तियों और ऊर्जाओं का मिला देता है।
- उत्तर और पूर्व के बीच वाले कोण को उत्तर-पूर्व या ईशान कहते हैं। पूर्व और दक्षिण के बीच वाले कोण को दक्षिण-पूर्व या आग्नेय कहते हैं, दक्षिण और पश्चिम के बीच वाले कोण को दक्षिण-पश्चिम या नैऋत्य कहते हैं।
- उसी तरह पश्चिम और उत्तर के बीच के कोण को उत्तर-पश्चिम या वायव्य कोण कहा जाता है और मध्य स्थान को ब्रह्मस्थान के रूप में जाना गया है।

ईशान कोण

- पूर्व और उत्तर दिशाएं जहां पर मिलती हैं उस स्थान को ईशान कोण की संज्ञा दी गई है। यह दो दिशाओं का सर्वोतम मिलन स्थान है। यह स्थान भगवान शिव और जल का स्थान भी माना गया है।
- ईशान को सदैव स्वच्छ और शुद्ध रखना चाहिए।
- इस स्थान पर जलीय स्रोतों जैसे कुंआ, बोरिंग वगैरह की व्यवस्था सर्वोतम परिणाम देती है।
- पूजा स्थान के लिए ईशान कोण को विशेष महत्व दिया जाता है। इस स्थान पर कूड़ा करकट रखना, स्टोर, टॉयलट वगैरह बनाना वर्जित है।

आग्नेय कोण

- दक्षिण और पूर्व के मध्य का कोणीय स्थान आग्नेय कोण के नाम से जाना जाता है। नाम से ही साफ हो जाता है कि यह स्थान अग्नि देवता का प्रमुख स्थान है इसलिए रसोई या अग्नि संबंधी (इलैक्ट्रॉनिक उपकरणों आदि) के रखने के लिए विशेष स्थान है।
- शुक्र ग्रह इस दिशा के स्वामी हैं।
- आग्नेय का वास्तुसम्मत होना निवासियों के उत्तम स्वास्थ्य के लिए जरूरी है।

नैऋत्य कोण

- दक्षिण और पश्चिम दिशा के मध्य के स्थान को नैऋत्य दिशा का नाम दिया गया है। इस दिशा पर निरूति या पूतना का आधिपत्य है।
- ज्योतिष के अनुसार राहू और केतु इस दिशा के स्वामी हैं।
- इस क्षेत्र का मुख्य तत्व पृथ्वी है। पृथ्वी तत्व की प्रमुखता के कारण इस स्थान को ऊंचा और भारी रखना चाहिए।
- इस दिशा में गड्ढे, बोरिंग, कुंए इत्यादि नहीं होने चाहिए।

वायव्य कोण

- उत्तर और पश्चिम दिशा के मध्य के कोणीय स्थान को वायव्य दिशा का नाम दिया गया है।
- इस दिशा का मुख्य तत्व वायु है। इस स्थान का प्रभाव पड़ोसियों, मित्रों और संबंधियों से अच्छे या बुरे संबंधों का कारण बनता है।
- वास्तु के सही उपयोग से इसे सदोपयोगी बनाया जा सकता है।

<u>घर का नक्शा वास्तु शास्त्र के अनुसार</u>

- वास्तुशास्त्र एक ऐसा भारतीय शास्त्र है जो प्राचीन काल से भारत में अपनी जड़ें जमाये हुए है।
- वास्तुशास्त्र एक ऐसी विधा है जो दिशाओं के स्वभाव के अनुसार घर का नक्शा बनाने का सुझाव देती है ताकि आपके घर का हर एक कोना दिशाओं के अनुकूल बनें जिससे हर कोने में सकारात्मक ऊर्जा बनी रहे।

- लेकिन जब वास्तु के अनुसार घर नहीं बनवाया जाता है तो घर का जो क्षेत्र दिशा के अनुकूल नहीं होता है वहां नकारात्मकता बढ़ती जाती है जो परिवार और घर की सुख-समृद्धि में अड़चन पैदा करने लगती है।
- ऐसे में बेहतर तो यही होगा कि घर बनाते समय ही वास्तु का ध्यान रखा जाएँ और हर कोना दिशा को ध्यान में रखकर तय किया जाए।
- वास्तु में 9 दिशाएं होती है यानी 8 दिशाओं के अलावा मध्य दिशा। वास्तुशास्त्र के अनुसार घर या ऑफिस के बिलकुल मध्य का ये स्थान सम्बंधित व्यक्ति के जीवन पर गहरा प्रभाव डालता है इसलिए इस केंद्र यानी मध्य स्थान को विशेष महत्व दिया जाता है।
- घर की दक्षिण दिशा का सम्बन्ध कैरियर से होता है और दक्षिण-पश्चिम दिशा व्यक्ति की कुशलता, बुद्धिमत्ता और ज्ञान से सम्बंधित होती है।
- पश्चिम दिशा का सम्बन्ध व्यक्ति के पारिवारिक संबंधों से होता है। उत्तर दिशा का सम्बन्ध सामाजिक सम्मान से होता है और उत्तर-पश्चिम दिशा धन और समृद्धि से जुड़ी होती है जबकि उत्तर-पूर्व दिशा प्यार और पति-पत्नी के संबंधों को प्रभावित करती है।
- घर की पूर्व दिशा बच्चों से सम्बंधित होती है। उनके विकास, सोच और स्वास्थ्य को ये दिशा प्रभावित करती है जबकि दक्षिण-पूर्व दिशा उन करीबी लोगों से जुड़ी होती है जो हर परिस्थिति में आपकी सहायता करने के लिए तैयार रहते हैं।

दिशाओं के अनुसार घर का नक्शा इस प्रकार बनायें

- **घर का मुख्य द्वार** – घर का मुख्य द्वार पूर्व दिशा में होना चाहिए। ऐसा होने पर समृद्धि का मार्ग खुलता है जबकि दक्षिण दिशा में घर का मुख्य द्वार होना मुश्किलों को बढ़ाता है। ऐसे में आपको इस सम्बन्ध में वास्तु के अनुसार उपाय करना चाहिए।
- घर के मुख्य द्वार पर कोई बिजली का खम्भा या पेड़ नहीं होना चाहिए। इन्हें अवरोधक माना जाता है। इसके अलावा T पर भी घर का मुख्य द्वार नहीं होना चाहिए। घर के सामने तिराहा या चौराहा भी नहीं होना चाहिए क्योंकि ये नकारात्मकता को बढ़ाते हैं।
- **देवताओं की दिशा –** घर के निर्माण में अग्नि, जल और वायु देवता का विशेष ध्यान देने की जरुरत होती है यानी अग्नि के स्थान पर अग्नि से सम्बंधित कार्य ही होने चाहिए और जल के स्थान पर जल से सम्बंधित कार्य। इनकी दिशा विपरीत करने की स्थिति में काफी परेशानी उठानी पड़ सकती है।
- **रसोई का सही स्थान –** रसोई का सम्बन्ध अग्नि देवता से होता है और इनसे जुड़ा कोण आग्नेय कोण, दक्षिण-पूर्वी दिशा में होता है इसलिए रसोई का निर्माण इसी दिशा में किया जाना चाहिए।

- **पानी के टैंक का स्थान –** घर में पानी जमा करने का कोण ईशान कोण होता है जो उत्तर-पूर्वी दिशा में होता है इसलिए पानी जमा करने का स्थान इसी दिशा में बनाना चाहिए।
- **पूजा घर –** पूजा घर भी ईशान कोण में बनाना ही अच्छा रहता है।
- **शौचालय का सही स्थान –** घर में शौचालय नैऋत्य कोण में ही बनवाएं। घर के किसी भी कोने में कचरा जमा होना नकारात्मक ऊर्जा को बढ़ाता है जिसका प्रभाव घर-परिवार की शांति और समृद्धि पर पड़ता है।
- घर का हर कोना अपना विशेष महत्व रखता है और उनसे जुड़ी दिशाएं भी। इसलिए अगर आप चाहते हैं कि परिवार से जुड़े हर क्षेत्र में आप सुखी और संपन्न बने रहें और कैरियर को भी बेहतर बना सकें तो वास्तु के अनुसार ही घर का नक्शा बनवाएं और इनमें दिशाओं के अनुसार सही रंग करवाकर भी आप बेहतरीन और मनमाफिक परिणाम प्राप्त कर सकते हैं
- इसलिए घर की नींव रखने से पहले वास्तु शास्त्र का सहयोग लीजिए और अपने परिवार को नए घर के साथ-साथ इससे जुड़ी सुख-शांति और खुशियों की सौगात भी दे दीजिये।

भवन का वास्तु

- भवन में कमरों का निर्धारण वास्तु अनुसार निम्न प्रकार से किया जाना चाहिए।
- अन्य निम्नांकित मुख्य बिन्दुओं पर भी ध्यान रखना चाहिएः
- भवन यथासम्भव चारों ओर खुला स्थान छोड़कर बनाना चाहिए।
- विदिशा भूखण्ड में विदिशा में भवन तथा मुख्य दिशावाले भूखण्ड में दिशा में ही भवन बनाना चाहिए। यथासंभव भवन की दिशा के समानान्तर होना चाहिए। पूर्व व उत्तर की चारदीवारी पश्चिम व दक्षिण के समानान्तर न हो तो भवन दक्षिण व पश्चिम की चारदीवारी के समानान्तर ही बनाना चाहिए। पुराने निर्माण में ऐसा न होने पर भवन की पश्चिम व दक्षिण की अतिरिक्त चारदीवारी बनाने से यह दोष ठीक हो जाता है।
- भवन के पूर्व एवं उत्तर में अधिक तथा दक्षिण व पश्चिम में कम जगह छोड़ना चाहिए।
- भवन की ऊँचाई दक्षिण एवं पश्चिम में अधिक होना चाहिए।
- बहुमंजिला भवनों में छज्जा/बालकनी, छत उत्तर एवं पूर्व की ओर छोड़ना चाहिए।